بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
24

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 08 मई, 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.
(शहादत महीने की तिथि 08 ,1405 हश)

सच्चाई और रास्तबाज़ी हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सीरत-ए-मुबारका का एक चमकता हुआ पहलू।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 08.05.2026

محلہ احمدیہ قادیان،پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूर: फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला, ने फ़रमाया: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सीरत बयान करते हुए आप अलै की सिदाक़त के मेयार के कुछ हवाले और वाक़िआत बयान किए थे। आज भी चंद वाक़िआत बयान करूँगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर एक मुक़द्दमा डॉक्टर हेनरी मार्टिन क्लार्क की तरफ़ से इक़दाम-ए-क़त्ल का दाइर हुआ था। यह इंतिहाई ख़तरनाक मुक़द्दमा था। आप अलै फ़रमाते हैं: यह मुक़द्दमा ऐसा ख़तरनाक था कि फाँसी की सज़ा भी हो सकती थी। यहूद की तरफ़ से रोमी अदालत में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर किए जाने वाले मुक़द्दमे का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि इस क़िस्म का मुक़द्दमा मुझ पर भी हुआ था। मसीह अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ तो यहूदियों ने मुक़द्दमा किया था, मगर इस सल्तनत में मेरे ख़िलाफ़ जिसने मुक़द्दमा किया वो मुअज़्ज़ज़ (सम्मानित) पादरी था और डॉक्टर भी था। जिसने मुझ पर इक़दाम-ए-क़त्ल का मुक़द्दमा बनाया और उसने गवाही पूरी तरह बहम (प्रस्तुत) पहुँचाई , यहाँ तक कि मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी, जो इस सिलसिले का सख़्त मुख़ालिफ़ दुश्मन है, वो गवाही देने के लिए अदालत में आया और जहाँ तक उससे हो सका उसने मेरे ख़िलाफ़ गवाही दी और पूरे तौर पर मुक़द्दमा मेरे ख़िलाफ़ साबित करने की कोशिश की।

यह मुक़द्दमा कैप्टन डगलस डिप्टी कमिश्नर गुरदासपुर के इजलास में था। आप अलै फ़रमाते हैं: तमाम गवाहियाँ मेरे ख़िलाफ़ बड़े ज़ोर-शोर से दी गईं। ऐसी हालत और ऐसी सूरत में कोई क़ानूनदान अहल-ए-राय भी नहीं कह सकता था कि मैं बरी हो सकता हूँ। मगर ख़ुदा तआला ने जैसे मुक़द्दमे से पहले

मुझे इत्तिला दी, उसी तरह यह भी क़बल-अज़-वक़्त ज़ाहिर कर दिया था कि मैं इसमें बरी होऊँगा। कैप्टन डगलस को मुद्दई के बयान पर कुछ शुबहा था, इसलिए उसने अब्दुल हमीद को पुलिस अफ़सर कैप्टन लेमार्चंद के सुपुर्द किया कि दोबारा तफ़तीश करो। कैप्टन ने अब्दुल हमीद को बुलाया और उसको कहा कि सच बयान कर। अब्दुल हमीद इस पर भी वही क़िस्सा जो उसने पहले पेश किया था वही कहता रहा। कैप्टन साहब ने सख़्ती से कहा कि असल बात बयान कर। इस पर उसने असलियत खोल दी और साफ़ इक़रार किया कि मुझे धमकाकर यह बयान कराया गया था, लेकिन मुझे हरगिज़ हरगिज़ मिर्ज़ा साहब ने क़त्ल के लिए नहीं भेजा। कैप्टन इस बयान को सुनकर ख़ुश हुआ और उसने डिप्टी कमिश्नर को तार दिया कि हमने मुक़द्दमा निकाल लिया है।

फ़रमाते हैं कि उस वक़्त कोर्ट में मैं देखता था कि डिप्टी कमिश्नर असलियत के खुल जाने से बड़ा ख़ुश था और उन ईसाइयों पर उसे सख़्त ग़ुस्सा था जिन्होंने मेरे ख़िलाफ़ झूठी गवाही दी। उसने मुझे कहा कि आप इन ईसाइयों पर मुक़द्दमा कर सकते हैं। मगर चूँकि मैं मुक़द्दमेबाज़ी से मुतनफ़्फ़िर (नफ़रत करता) हूँ, मैंने यही कहा कि मैं मुक़द्दमा नहीं करना चाहता। मेरा मुक़द्दमा आसमान पर दाइर है।

हुज़ूर फ़रमाते हैं: इसी मुक़द्दमे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की रास्तबाज़ी और आला अख़लाक़ के बारे में एक ग़ैर-अज़-जमाअत वकील मौलवी फ़ज़्लुद्दीन साहब का बयान है। वो कहते हैं: मेरे दिल में मिर्ज़ा साहब की बहुत अज़मत है। मैं उनका मक़ाम व मर्तबा बहुत अज़ीमुश्शान समझता हूँ। अगरचे उनके दावों के बारे में इल्म-ए-नफ़्स की रो से यह मानता हूँ कि उन्हें समझने में ग़लती हो, लेकिन वो बहरहाल एक नेक इंसान हैं।

यही रिवायत हज़रत शेख़ याक़ूब अली इरफ़ानी साहब (रज़ियल्लाहु अन्हु) से एक हिंदू लाला दीना नाथ ने बयान की कि एक मजलिस में मौलवी फ़ज़्लुद्दीन साहब की मौजूदगी में किसी ने उनकी ऐसे रंग में मुख़ालिफ़त की जो शराफ़त और अख़लाक़ के पहलू से गिरी हुई थी। यह सुनकर मौलवी फ़ज़्लुद्दीन साहब मरहूम को बहुत जोश आ गया। उन्होंने बड़े जज़्बे से कहा कि मैं मिर्ज़ा साहब का मुरीद नहीं हूँ, उनके दावों पर मेरा एतिक़ाद नहीं। लेकिन मिर्ज़ा साहब की अज़ीमुश्शान शख़्सियत और अख़लाक़ी कमाल का मैं गवाह हूँ। मैं वकील हूँ और हर क़िस्म के तबक़े के लोगों के मुक़द्दमात मेरे पास आते हैं। हज़ारों को मैंने इस सिलसिले में देखा कि जिसे भी क़ानूनी मशवरे के तहत अपने बयान को बदलने की ज़रूरत पेश आए, उसने बिला-तअम्मुल अपना बयान बदल लिया। लेकिन मैंने अपनी उम्र में सिर्फ़ मिर्ज़ा साहब ही को देखा है जिन्होंने सच के मक़ाम से क़दम नहीं हटाया।

मार्टिन क्लार्क के मुक़द्दमे में मैंने उनके लिए एक क़ानूनी बयान लिखा और उनकी ख़िदमत में पेश किया। उन्होंने इसे पढ़कर कहा: इसमें तो झूठ है। मैंने कहा कि मुल्ज़िम का बयान हलफ़ी नहीं होता और क़ानूनन उसे इजाज़त है कि जो चाहे वो बयान करे। इस पर आप अलै ने फ़रमाया कि क़ानून ने तो उसे यह इजाज़त दे दी है, मगर ख़ुदा तआला तो इजाज़त नहीं देता। पस मैं सही-सही अम्र पेश करूँगा।

फिर हमने उनसे कहा कि आप सिर्फ़ यह कह दें कि मैं अब्दुल हमीद को नहीं जानता, बाक़ी हम सँभाल लेंगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमारी सारी तजावीज़ को सुनकर फ़रमाया:

"मैं दुनिया में रास्ती को क़ायम करने के लिए आया हूँ, मैं हरगिज़ झूठ नहीं बोलूँगा, चाहे मुझे फाँसी दे दी जाए। मैं अब्दुल हमीद को जानता हूँ, वो क़ादियान में आया करता था, मैं इससे हरगिज़ इनकार नहीं कर सकता, चाहे कुछ भी हो जाए।"

हमने अर्ज़ की कि झूठ न बोलना चाहें तो गोल-मोल बात कर दें, मगर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: मैं तो ऐसा भी नहीं कर सकता। ख़ुदा ने मुझे दुनिया में अपना नमूना पेश करने के लिए भेजा है।

मैं जान बचाने की ख़ातिर ऐसा नमूना पेश करने के लिए तैयार नहीं हूँ। अगर सच बोलते हुए हमारी जान भी जाए तो तब भी हम कामयाब हो गए।

जब हुज़ूर अलैहिस्सलाम का बयान अदालत में हुआ तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने साफ़ तौर पर बयान कर दिया कि मैं अब्दुल हमीद को जानता हूँ। इस तरह हमने यक़ीन कर लिया कि अब रिहाई नामुमकिन है। मगर ख़ुदा की नुसरत इस मुक़द्दमे में हुज़ूर अलैहिस्सलाम को जो नसीब हुई। यह देखकर हम हैरान हो गए कि ख़ुदा ने किस तरह से अपने मामूर की मदद की और वो इस संगीन (कठोर) मुक़द्दमे में बाइज़्ज़त तौर पर बरी होकर कामयाब हुए।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि 1916 ء में मिस्टर वाल्टर सिलसिला-ए-अहमदिया के बारे में तहक़ीक़ करने के लिए क़ादियान आए। उन्होंने ख़्वाहिश ज़ाहिर की कि मुझे बानी-ए-सिलसिला के किसी पुराने सहाबी से मिलाया जाए। उस वक़्त मुंशी अरोड़े ख़ान साहब रज़ियल्लाहु अन्हु मरहूम क़ादियान में थे। वाल्टर साहब को मुंशी साहब के साथ मिलवाया गया। मिस्टर वाल्टर ने मुंशी साहब रज़ि. से रस्मी गुफ़्तुगू के बाद यह दरयाफ़्त किया कि आप पर जनाब मिर्ज़ा साहब की सिदाक़त की किस दलील ने सबसे ज़्यादा असर किया?

मुंशी साहब रज़ि. ने जवाब दिया: मैं ज़्यादा पढ़ा-लिखा आदमी नहीं और ज़्यादा इल्मी दलीलें नहीं जानता, मगर मुझ पर जिस बात ने सबसे ज़्यादा असर किया वो हज़रत साहब अलैहिस्सलाम की ज़ात थी। आप अलै से ज़्यादा सच्चा, ज़्यादा दियानतदार और ख़ुदा पर ज़्यादा ईमान रखने वाला शख़्स मैंने नहीं देखा। उन्हें देखकर कोई शख़्स यह नहीं कह सकता था कि यह शख़्स झूठा है। बाक़ी मैं तो उनके मुँह का भूखा था — मुझे ज़्यादा दलीलों का इल्म नहीं।

हुज़ूर फ़रमाते हैं: यह कहकर मुंशी साहब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की याद में इस क़दर बेचैन हो गए कि फूट-फूटकर रोने लगे और रोते-रोते उनकी हिचकी बँध गई। मिस्टर वाल्टर का चेहरा बिल्कुल सफ़ेद हो गया। उन्होंने अपनी किताब "अहमदिया मूवमेंट" में इस वाक़िए का ख़ास तौर पर ज़िक्र भी किया और लिखा कि जिस शख़्स ने अपनी सोहबत (संगती) में इस क़िस्म के लोग पैदा किए हैं, उसे हम कम-अज़-कम धोकेबाज़ नहीं कह सकते।

मिर्ज़ा रहीम बख़्श साहब बयान करते हैं: मुझे एक अहमदी शख़्स मिला। चंद बातें हुईं। मैं क़ाइल हो गया। रात को ख़्वाब आई कि हम चारों भाई एक पहाड़ की ग़ार में भटके हुए हैं, रास्ता नहीं मिलता। फिर मैं एक तरफ़ से चढ़कर ऊपर आ गया हूँ। मैंने देखा कि रेल चल रही है मगर गाड़ी ज़मीन से बहुत ऊँची है। मैं हैरान हूँ कि कैसे चढ़ूँ। एक शख़्स खड़ा है, कहता है कि नीचे जो रस्सी आसमान से लटकी हुई है उसको पकड़ो — ऊपर चढ़ सकते हो।

कहते हैं: सुबह इब्राहीम साहब मेरे पास आए। मैंने ख़्वाब सुनाई तो उन्होंने क़ुरआन करीम निकाल लिया और وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ दिखाया कि इशारा है कि अल्लाह की रस्सी को पकड़ लो। मैंने बैअत का ख़त लिख दिया। जवाब आया कि बैअत मंज़ूर है, मगर क़ादियान में ज़रूर आओ।

कहते हैं: मैं अमृतसर स्टेशन से बटाला वाली गाड़ी में बैठा तो दो-तीन बूढ़े सिख साथ बैठ गए। मुझसे पूछा कि कहाँ जाते हो? मैंने कहा: क़ादियान। उन्होंने कहा: मिर्ज़े के क़ादियान? मैंने कहा: हाँ। मैंने हज़रत साहब अलैहिस्सलाम के बारे में पूछा कि वो कैसे हैं? तो अपनी अक़्ल के मुताबिक़ कहने लगे कि बड़ा मशहूर है, वो ख़ुदाई का दावा करता है। मैंने वैसे ही शरारतन कहा कि मैं मिर्ज़ा को जानता हूँ, सियालकोट में वह और मेरा बाप दोनों मुलाज़िम थे, वो मिलकर भाँग पीते थे। मैंने वैसे ही मज़ाक़ में कह दिया। इस पर सिखों ने कहा: मियाँ! यह हरगिज़ मत कहो। वो तो एक साधू आदमी है और निहायत सादिक़ और अमीन आदमी

है। वो ऐसा मशहूर है कि लोग उसकी मिसाल पेश किया करते हैं। कोई सच बोले तो हमारे यहाँ लोग कहते हैं, क्या तू मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा का लड़का है? यह तो मिसाल बन चुका है। एक ने कहा: वो हमारे साथ बचपन में खेलता था। हम इसलिए अदब करते थे कि रईस का बेटा है। फिर उनमें तब्दीली आती गई और अंदर ही अंदर रहने लगे — यानी गोशानशीन हो गए।

कहते हैं: मैंने उनसे यह बातें सुन लीं। जब मैं क़ादियान मेहमानख़ाने उतरा तो तीन-चार लड़के थे। मैंने आज़माने के लिए उनसे सख़्ती से कलाम किया, मगर मेरी सख़्ती के मुक़ाबले में बड़ी नरमी और अख़लाक़ से पेश आए। क़ादियान में बहुत सख़्त गर्मी थी। मैंने वापस जाना चाहा तो एक अरब मिला। उसने कहा: अब आए हो तो हज़रत साहब अलैहिस्सलाम देखे बग़ैर वापस न जाना, यह ज़माना फिर हाथ न आएगा। इसी दौरान अज़ान हो गई तो मैंने सोचा नमाज़ पढ़ लूँ। नमाज़ के बाद हुज़ूर अलैहिस्सलाम मजलिस में बैठ गए। सर नीचे किया हुआ था। मैं सामने खड़ा था और मेरी दाढ़ी-मूँछ कुछ न थी। मैंने दिल में कहा कि जब तक मैं इस शख़्स का चेहरा नहीं देखूँगा यक़ीन नहीं करूँगा। थोड़ी देर के बाद हज़रत साहब अलैहिस्सलाम ने चेहरा उठाकर देखा, मैंने दिल में कहा कि आप अलै सादिक़ हैं। फिर थोड़ी देर बाद सर उठाकर देखा, मैंने कहा: اٰمَنَّا— यानी मैंने मान लिया। तीसरी दफ़ाअ फिर देखा तो कहते हैं कि मैं क़ुर्बान ही हो गया।

हज़रत चौधरी सर ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया: जब मैंने पहली बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की लाहौर में ज़ियारत की थी, मेरे दिल में जो असर उस वक़्त हुआ वो यही था कि यह शख़्स सादिक़ है और जो कहता है वो सच है। और एक ऐसी मुहब्बत मेरे दिल में आप अलै के बारे में अल्लाह तआला की तरफ़ से डाल दी गई कि वही मेरे लिए हुज़ूर अलैहिस्सलाम की सिदाक़त की असल दलील है। मैं गो उस वक़्त बच्चा था, लेकिन उस वक़्त से लेकर अब तक मुझे किसी वक़्त भी किसी दलील की ज़रूरत नहीं पड़ी। बाद में मुतवातिर ऐसे वाक़िआत रूनुमा होते रहे जो मेरे ईमान की मज़बूती का बाइस हुए क्योंकि मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को आप अलै का चेहरा-ए-मुबारक देखकर ही माना था और वही असर अब तक मेरे लिए हुज़ूर अलैहिस्सलाम के दावे की सिदाक़त का सबसे बड़ा सुबूत है।

अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम इस हक़ीक़त को समझते हुए सच्चाई पर क़ायम रहने वाले हों और हमेशा सच्चाई के आला मेयार पर अमल करने वाले हों।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ
اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब - 18001032131